233 क लेख – लोक संसद और जन संसद

233 ख लेख – आंदोलन अन्ना और कांग्रेस

233 ग प्रश्न– श्री छबील सिंह सिसोदिया, पिलखुवा , गाजियाबाद , उत्तर प्रदेश

233 घ प्रश्न– श्री रामकृष्ण पौराणिक सागर मध्य प्रदेश

233 च प्रश्न– श्री अरविन्द प्रकाश , मढई चौक , बदायु उत्तर प्रदेश

233 छ प्रश्न– श्री योगिन गुर्जर 476 साखर पेठ शोलापुर महाराष्ट्र

233 ज प्रश्न– श्री जगदीश गांधी, सीटी मोन्टेसरी स्कूल लखनउ

233 झ प्रश्न– पवन कुमार जनसत्ता 13 मार्च 2011

233 ट प्रश्न– श्री भारत डोगरा, प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री, आचार्य कुल पत्रिका में लेख द्वारा

233 ठ प्रश्न श्री अनिल कुमार, आचार्य कुल पत्रिका के लेख द्वारा

233 ड प्रश्न– श्री बजरंग बजाज– 7/1 मालवीय नगर जयपुर

233 ढ विचार– श्री चन्द्रमौलेश्वर जी

233 त– यात्रा 25/10 तक संशोधित है

लोक संसद और जन संसद

श्री चिन्मय व्यास जी ने देहरादून से लोक संसद संबंधी प्रस्ताव पर कुछ प्रश्न उठाये हैं। उन्होंने पूछा है कि इसका चुनाव कैसे होगा? उनका सुझाव है कि समानान्तर सांसद बनाने की अपेक्षा वर्तमान सांसद में ही अच्छे लोग क्यों न भेज दें। क्यों न अन्ना जी रामदेव जी आदि मिलकर अच्छे लोगों का चयन कर लें और उन्हे चुनाव लड़ाकर संसद में भेज दें और बहुमत बना लें। श्री व्यास जी को शंका है कि ऐसी लोक संसद की संवैधानिक मान्यता क्या होगी?

ऐसे ही कई प्रश्न अन्य पाठकों ने भी उठाये हैं जो स्वाभाविक हैं। हम कोई समानांतर लोक संसद का प्रस्ताव नहीं कर रहे। लोक संसद वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था के अन्तर्गत ही एक लोकतंत्र सहायक इकाई होगी जो संसद के वर्तमान दायित्व हस्तक्षेप तथा अधिकारों में कमी करेगी। वर्तमान संसद के पास कार्यपालिका की समीक्षा तथा निगरानी का भी दायित्व है, विधायिका का सम्पूर्ण दायित्व उसका है ही, साथ ही वही संविधान की भी समीक्षा करती है। वर्तमान संसद ही अन्य संवैधानिक इकाइयों की भी समीक्षा करती है। इतना ज्यादा दायित्व उससे सम्हल नहीं रहा। इन दायित्वों को पूरा करने के नाम पर उसके पास अधिकार भी इकट्ठे हो जाते हैं जिनका दुरूपयोग भी होता रहता है। मेरा प्रस्ताव है कि लोक संसद वर्तमान संसद का बोझ कम करके उसकी सहायक होगी। साथ ही उसके अधिकार कम करके उनका दुरूपयोग भी रोकेगी। वर्तमान संसद ही अन्य संवैधानिक इकाइयों, जैसे न्यायपालिका, चुनाव आयोग, तंत्र की वेतन समीक्षा, राज्य केन्द्र अधिकार विभाजन आदि विषयों की भी समीक्षा करती रहती है जो गलत परंपरा है। वर्तमान संसद अन्य संवैधानिक इकाइयों के समकक्ष भी है और समीक्षक भी। लोक संसद हो जाने से अन्य संवैधानिक इकाइयों की समीक्षा का बोझ तथा टकराव से वह मुक्त हो सकेगी।

चुनाव प्रणाली उक्त प्रस्ताव में लिखी हुई है। आपका सुझाव अच्छे व्यक्ति को चुनने का है। रामदेव जी तथा अन्ना हजारे जी भी इस संबंध में भ्रमित हैं। एक खटारा गाड़ी पर अच्छा ड्राइवर हो और एक नई गाड़ी पर अन्जान ड्राइवर हो, ये दोनों ही स्थितियॉ घातक हैं। साठ वर्ष से भारत में हमने एक खटारा गाड़ी पर अच्छे ड्राइवर बिठाने का प्रयत्न किया। धीरे–धीरे ड्राइवरों का भी स्तर गिरता गया और अच्छे ड्राइवर की जगह ऐसे धूर्त ड्राइवर बनने लगे जो गाड़ी का सामान बेच बेच कर खाने लगे। आज भी आप वही रट लगा रहे हैं कि अच्छे ड्राइवर बिठाओ। मेरा कहना है कि गाड़ी खटारा है। गाड़ी या तो ठीक कराओ या बदल दो। आप कह रहे हैं कि ड्राइवर बदल दो। आप अच्छा व्यक्ति चुनने को पहली प्राथमिकता बता रहे हैं। अन्ना जी और रामदेव जी भी भ्रमवश यही बात कह रहे हैं। जबकि आप सब जानते हैं कि साठ वर्ष पहले राजनीति में आज की अपेक्षा कई गुना ज्यादा अच्छे लोग थे। उसके बाद भी राजनैतिक व्यवस्था खराब होती गई। स्थिति यहॉ तक खराब है कि आज राजनीति में अच्छे व्यक्तियो का प्रवेश ही कठिन हो गया है। अच्छा व्यक्ति चुनाव जीत ही नहीं सकता। यदि एकाध जीत भी गया तो उसके अच्छे रहने की कोई गारंटो नहीं और यदि रह भी गया तो वह किसी न किसी तरीके से बाहर कर ही दिया जायेगा। अन्ना जी ने स्वयं कहा है कि यदि अन्ना जी स्वयं भी कहीं से कोई छोटा मोटा भी चुनाव लड़े तो वे जीत नहीं सकते। दुर्भाग्य है कि अन्ना जी भी कभी कभी अच्छे व्यक्ति की बात करने लगते हं जबकि पहली प्राथमिकता है व्यवस्था को बदलना और दूसरी प्राथमिकता है अच्छे व्यक्ति का चुनाव।

तंत्र से जुड़े सब लोग अन्ना जी की व्यवस्था परिवर्तन की मांग के विरूद्ध मैदान में कूदते जा रहे हैं। सुभाष कश्यप सहित कई विद्वानों न राइट टू रिकाल को अव्यावहारिक बताया है। चुनाव विशेषज्ञ और प्रबंधक एम वाई कुरैशी जी भी राइट टू रिकाल के खिलाफ मैदान में आ गये हैं। मैं देशबंधु दैनिक अखबार नियमित पढ़ता हूँ। उसके सम्पादक प्रभाकर चौबे जी प्रारंभ से ही अन्ना आंदोलन के विरूद्ध रहे हैं। उन्होंने सत्रह अक्टूबर ग्यारह के देशबंधु में सम्पादकीय लिख कर अन्ना आंदोलन को लोकतंत्र को समाप्त करने वाला बताया है। मैं आज तक नहीं समझा कि अन्ना आंदोलन की कौन सी मांग लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत है? मांग क्या है हमारी? राइट टू रिकाल, स्थानीय इकाई सशक्तिकरण, जन संसद या लोक संसद बनाकर वर्तमान संसद के अधिकार, दायित्व तथा हस्तक्षेप का बंटवारा। श्री कुरैशी अथवा कुछ संविधान विद तो इस मांग को मात्र अव्यावहारिक ही बता रहे थे किन्तु सम्पादक महोदय तो इन मांगों में लोकतंत्र की हत्या तक देखने लग गये। आम नागरिकों के अनाज दाल शक्कर और तेल जैसी आवश्यक वस्तुओं से टैक्स वसूल करके अखबारों में बड़े–बड़े खर्चीले विज्ञापन देने में तो लोकतंत्र की हत्या नहीं होती किन्तु व्यवस्था परिवर्तन की मांग में सम्पादक महोदय लोकतंत्र की हत्या देख रहे हैं। सच्चाई यह है कि साठ वर्षों से तिल तिल करके लोकतंत्र को इस मरणासन्न स्थिति तक पहुँचाने वाले आज बहुत चिन्तित हो होकर मैदान में उतर रहे हैं। ऐसे जहरीले प्रचार से सतर्क रहना चाहिये।

व्यास जी ने लिखा है कि हम लोग अच्छे उम्मीदवारों का नाम घोषित करें, उन्हें चुनाव जितायें, चुनाव के बाद उनकी निगरानी करें और यदि वे गड़बड़ करें तो जनता की गालियॉ भी खुद सुने। क्या यह आपकी लोकतांत्रिक सलाह है ? क्या यह उचित नहीं कि अन्ना जी अथवा हम देश के मतदाताओं को सलाह देने तक ही सीमित रहें न कि उन्हें डिक्टेट करें। मतदाता अच्छे व्यक्ति को चुनें यह उन्हें एक सलाह है। इसस मतदाताओं की स्वयं की निर्णय की स्वतंत्रता में कटौती नहीं होती। किन्तु कौन व्यक्ति अच्छा है यह भी चयन हम ही करें यह सलाह न होकर एक प्रकार का डिक्टेशन है। मतदाता चुनाव करते समय उम्मीदवार की समीक्षा न करके सलाह दाता की समीक्षा करे यह सलाह लोकतांत्रिक नहीं है। यदि तंत्र से जुड़ा व्यक्ति अथवा तंत्र से लाभ उठा रहा व्यक्ति अन्ना जी को चुनाव लड़ने लड़ाने हेतु ललकारे तो यह उनकी मजबूरी है क्योंकि बाहर खड व्यक्ति को भी कीचड़ में कूदने हेतु प्रेरित कर दिया जाये तो उसकी गति कम कर देना आसान होगा किन्तु पता नहीं आप अन्ना जी का ऐसी सलाह क्यों दे रहे हैं। अब तक तो अन्ना जी की टीम इस अभियान से अप्रभावित है किन्तु डर है कि वह भी कहीं ताव खाकर राजनीति में कूदने की भूल न कर बैठे। आखिर वे भी तो मनुष्य ही हैं, कोई देवता नहीं। हम आप सबका कर्तव्य है कि उनका मनोबल बनाये रखें। गांधी और जयप्रकाश के बाद बड़ी मुश्किल से किसी व्यक्ति से कुछ उम्मीदें बंधी हैं अन्यथा साठ वर्षों से या तो हमें विनोबा सरीखे संत मिले जिन्होंने राजनैतिक तिकड़मों से दूरी बनाते बनाते राजनीति से ही इतनी दूरी बना ली कि ये स्वयं तो पाक साफ रहे किन्तु राजनीति को ठीक करने से बिल्कुल किनारे रहे। दूसरी श्रेणी में मुरार जी मनमोहन सिंह सरीखे लोग हुए जो राजनीति में घुसकर उसे साफ करते करते खुद ही गंदे दिखने लग गये। परिणाम हुआ कि राजनीति अधिक से अधिक गन्दी होती चली गई। नई शुरूआत होनी चाहिये थी और हुई भी है। जब अन्ना जी ने कांग्रेस को हराने की बात कही तब डर होने लगा था कि कहीं अगला पड़ाव राजनैतिक दल तो नहीं होगा? किन्तु शीघ्र ही अन्ना जी ने भ्रम के बादल यह कह कर साफ कर दिये कि यदि कांग्रेस पार्टी मजबूत लोकपाल ले आती है तो हम उसका विरोध छोड़कर उसके पक्ष में प्रचार भी कर सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि हमारा उद्देश्य कांग्रेस विरोध या समर्थन नहीं है। हम तो सभी राजनैतिक दलों को एक ही थैली के चट्टे बट्टे मानते हैं। हम न तो किसी दल विशेष को अच्छा घोषित कर रहे हैं न बुरा। हमारी वर्तमान रणनीति है लोक पाल बिल। जो राजनैतिक दल हमसे सहमत है वह हमारा मित्र है और जो हमसे टकरायेगा, वह चूर चूर हो जायेगा। इसमें क्या गलत है? मैं भी मानता हूँ कि टीम अन्ना के इस कदम में कुछ भी गलत नहीं।

अन्ना जी ने बार बार कहा कि जन संसद वर्तमान राजनैतिक संसद से उपर है। हम लोक संसद कह रहे हैं और अन्ना जन संसद। इन दोनों की पृष्ठ भूमि बिल्कुल अलग अलग है। अन्ना जी जिसे जन संसद कह रहे हैं वह संसद का एक अमूर्त स्वरूप है जिसमें भारत का प्रत्येक मतदाता सम्मिलित है। इसे आप जन संसद भी कह सकते हैं तथा समाज भी। निश्चित रूप से जन संसद वर्तमान संसद से भी उपर है और संविधान से भी। उसे किसी तरह की कोई चुनौती नहीं है। वह चाहे तो संविधान को पूरी तरह बदल भी सकती है। किन्तु मैंने जिस लोक संसद का प्रस्ताव किया है वह मूर्त रूप में है, संवैधानिक इकाई है, विधि अनुसार है, जन संसद से बहुत नीचे है। हमारी लोक संसद तो वर्तमान संसद के समकक्ष ही है। वर्तमान संसद और लोक संसद में महत्वपूर्ण फर्क यही है कि वर्तमान संसद को भारतीय संविधान में मूल स्वरूप को छोड़कर संशोधन करने के असीम अधिकार प्राप्त हैं। वर्तमान तंत्र का ढांचा भारतीय संविधान को एक तरफ तो ढाल के रूप में सुरक्षा कवच सरीखे उपयोग करता है तो दूसरी ओर मनमाने संशोधन के अधिकारों से लैस होकर उसे अपनी मुट्ठी में भी जकड़ कर रखता है। लोक संसद भारतीय संविधान को संसद के ढाल बनने के रूप को भी कमजोर करेगी तथा संसद के संविधान संशोधन संबंधी असीम अधिकारों में भी बाधक बनकर संविधान को मुट्ठी से भी आजाद करा देगी। यदि एक बार भारतीय संविधान स्वतंत्र और मुक्त हो गया तो राजनैतिक उच्श्रृंखलता तो अपने आप रूक जायेगी क्योंकि संविधान रूपी सुरक्षा कवच हट जायेगा। रावण की नाभि में अमृत था। राम चाहे कितना भी आकमण करते किन्तु रावण सुरक्षित था जब तक वह अमृत कुण्ड सुरक्षित था। विभीषण ने राम को बताया कि रावण वध के पूर्व वह नाभि कुंड समाप्त होना आवश्यक है। अन्ना जी चाहे लाख प्रयत्न कर लें किन्तु जब तक यह संवैधानिक कवच है तब तक राजनैतिक बिरादरी सुरक्षित है। मेरी सलाह है कि अन्ना जी लोक संसद के प्रस्ताव द्वारा उन्हें बेनकाब करना शुरू करें। जन संसद की चर्चा से तो राजनैतिक दल सिर्फ विरोध ही कर रहे हैं किन्तु लोक संसद की चर्चा तो उन्हें बिल्कुल पागल हो कर देगी। हम कोई समानान्तर संसद नहीं बना रहे। हम तो एक सहायक संसद मात्र बना रहे हैं।

इस तरह लोक संसद का प्रस्ताव भारत की वर्तमान राजनैतिक समस्याओं का एक निश्चित समाधान है। यह प्रस्ताव राजनेताओं के इस दुष्प्रचार का भी समुचित उत्तर है कि आपको किसने चुना? लोक संसद का भी चुनाव भारतीय चुनाव आयोग द्वारा लोक सभा चुनाव के साथ साथ उसी तरीके से उसी के साथ उसी अवधि के लिये होगा। दोनों संसदों के बीच टकराव भी नहीं होगा क्योंकि दोनों का कार्यक्षेत्र बिल्कुल अलग अलग होगा। लोक संसद तो वर्ष में एकाध बार विशेष स्थिति में बैठेगी अन्यथा सारे काम तो वर्तमान संसद ही करेगी। लोक संसद का मुख्य कार्य तो संविधान संशोधन पर विचार करने तक सीमित है। अन्य कार्य तो छोटे छोटे हैं। एक दो वर्ष मे कभी बैठना पड सकता है । किन्तु प्रभाव इतना जबरदस्त होगा जैसे सांप के जहरीले दांत ही टूट गये हों। वर्तमान संसद विष दंत विहीन होकर रह जायेगी। इस प्रस्ताव पर व्यापक चर्चा होनी चाहिये।

आंदोलन अन्ना और कांग्रेस

हिसार का उपचुनाव और कांग्रेस की दुर्गति । प्रारंभ से ही पता था कि कांग्रेस जीत नही सकती किन्तु सम्मान पूर्वक हारने का प्रयत्न चल रहा था। स्पष्ट था कि जीत हार भजनलाल परिवार और चौटाला परिवार के बीच ही निश्चित है। कांग्रेस पिछले चुनाव मे भी तीसरे नम्बर पर थी। और इस

बार भी लक्षण वही दिख रहे थे। एकाएक भजनलाल परिवार और चौटाला परिवार ने अन्ना हजारे का आर्शीवाद लेकर कांग्रेस को कटघर मे खडा कर दिया। कांग्रेस तय ही नहीं कर पाई कि क्या करे। उसे ऐसी उम्मीद भी नही थी कि अन्ना हजारे ऐसा मजबूत निर्णय भी कर सकते है। उसने जनलोकपाल बिल को निःशर्त समर्थन की अन्ना की मांग अनसुनी कर दी। अन्ना ने कठोर निर्णय करते हुए कांग्रेस को सबक सिखाने की ठान ली और कांग्रेस को एकपक्षीय हराने की मांग कर दी । उसने सबसे अधिक जोर हिसार पर डाला क्योकि वहॉ कांग्रेस की हार तय थी। अन्ना जो के आहवान का व्यापक प्रभाव पडा और कांग्रेस प्रत्याशी की जमानत जप्त हो गई । निश्चित रूप से अन्ना हजारे की मांग का प्रभाव पडा अन्यथा कांग्रेस पार्टी की जमानत जप्त नही होती। वहॉ उनकी सरकार भी है और प्रयत्नो मे भी कोई कमी नहीं रही । केन्द्र मे भी कांग्रेस की ही सरकार है और हिसार दिल्ली के बिल्कुल ही निकट का क्षेत्र है। ऐसी स्थिति मे स्पष्ट है कि कांग्रेस पर अन्ना जी के आहवान का व्यापक प्रभाव पडा क्योकि यदि इस उप चुनाव मे भजनलाल जी की मृत्यु की सहानुभूति लहर होती तो चौटाला और विश्नोई के बीच इतना कम अंतर नही रहता।

कांग्रेस पार्टी यूपीए दो के प्रारंभ तक ठीक ठाक चल रही थी। मनमोहन सिंह जी की स्वच्छ छवि सबको पसंद थी । सोनिया जी का पूरा पूरा समर्थन था। दिग्विजय सिंह जी के मार्गदर्शन मे एक चौकडी ने राहुल गांधी के भीतर पारिवारिक सत्ता भाव मजबूत किया । राहुल जो को प्रधानमंत्री की ट्रेनिग दी जाने लगी। मनमोहन सिंह को अयोग्य सिंद्ध करने की कोशिशे हुई। सोनियां जी ने चाहे स्वयं सोचकर अथवा चौकडी की सलाह से एक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद बना दी। और इस परिषद से ही मनमोहन जी की उल्टी गिनती शुरू कर दी गई । लगभग पूरा मीडिया मनमोहन सिंह के विरूद्ध मैनेज किया गया।

कांग्रेंस पार्टी को विश्वास था कि भाजपा इसका लाभ नही ले सकेगी क्योकि भाजपा के पास कूटनीति का अभाव है । दीर्घावधि के योजनाकारो के अभाव मे भाजपा से कांग्रेस को कोई खतरा नही था । लग भी रहा था कि अब मनमोहन सिह हिम्मत छोड ही देगें किन्तु चौकडी की सारी चालाकी धरी की धरी रह गई जब इसी बीच अन्ना जी कूद पडे । अन्ना हजारे सरल हृदय मजबूत चरित्र तथा अनुभवी निकले । भाजपा एक अनाडी खिलाडी के रूप मे कांग्रेस के समक्ष बौनी सिद्ध हो रही थी किन्तु अन्ना जी के समक्ष कांग्रेंस की कूटनीति तो फेल हो गई और भाजपा का अनाडीपन पास हो गया। कांग्रेस पार्टी अपनी ही कूटनीति मे फंसती चली गई । उसने चौकडी की सलाह पर मनमोहन सिह को कमजोर करके राहुल की ताजपोशी की योजना बनाई थी किन्तु दाव उल्टा पडा और मनमोहन की जगह कांग्रेस पार्टी की ही विश्वसनीयता घटती चली गई। आज हालत यह है क अनाडी भाजपा मजबूत हो रही है और सीधी चाल वाली कांग्रेंस कमजोर । जिस टीम अन्ना के समक्ष कांग्रेस भाजपा की अपेक्षा कई गुना ज्यादा विश्वसनीय थी वही कांग्रेस पारिवारिक स्वार्थ के कारण फंसती जा रही है।

अब भी समय है कि

(1) सोनिया जी राहुल को प्रधानमंत्री बनाने के दांव पेंच रोके

(2) मनमोहन सिंह के साथ एकजटता स्थापित करें।

(3) अन्ना जी की टीम के साथ कूटनीतिक दांवपेंच बन्द करें ।

अन्यथा अभी तो हिसार ने संकेत दिया है। आगे यदि बात बढ़ी तो न राहुल प्रधानमंत्री बन पायगे न कांग्रेंस और तब स्वार्थ का सारा कलंक सोनिया के सिर ही आयेगा। मनमोहन सिंह और सोनिया एक साथ बैठें । राष्ट्रीय सलाहकार परिषद को या तो भंग करे या पुनर्गठन करें । अन्ना जी की टीम के साथ कूटनीति बन्द करें ।। संभव है कि कुछ दिनों मे फिर से विश्वास लौटे।

1श्री छबील सिंह सिसोदिया, पिलखुवा , गाजियाबाद , उत्तर प्रदेश

मैने भारत के राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री को पत्र लिखते हुए निवेदन किया है कि भारत के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त मूल अधिकारों मे एक अधिकार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी है । टीम अन्ना द्वारा व्यक्त विचार सत्य भी थे तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं के अंदर भी। फिर भी उसे संसद को अवमानना कहना हम नागरिको की समझ से बाहर है। जबकि सांसद विभिन्न सत्रो में अपने कर्तव्यो को अनदेखा करते हुए संसद मे अपने अभद्र व्यवहार एवं आचरण से विश्वाश्पटल पर अपनी धूमिल छवि अंकित कर चके है।

संविधान के अनुसार चुना हुआ सांसद उस क्षेत्र का जनप्रतिनिधि होता है । सदन मे बोलने की उसे पूर्ण स्वतंत्रता होती है। दल व किसी पार्टी को व्हिप जारी करने का कोई अधिकार नही क्योकि संविधान मे किसी दल व पार्टी नाम का कोई उल्लेख नही है। तो ऐसा कानून भी संवैधानिक नही। लेकिन पार्टी समय समय पर स्वार्थवश व्हिप करती रही है । जो सांसद की स्वतंत्रता का हनन है संविधान की अवहेलना करना है। वर्तमान सप्रंग सरकार बचाने के लिये संसद मे नोट के लेनदेन को उछालते हुये नोटो की गड्डी को देश व विदेश ने देखा । सदन इसे अवमानना मानता है? परन्तु राष्ट्र की अवमानना व अपमान है कि भारतीय संसद मे ऐसी आचार हीनता निम्म सोच का प्रदर्शन तक किया जाता है।

संसद संविधान के अनुसार न चलकर संविधान को अपने अनुसार चलाने लगी । संविधान मे समान नागरिक सहिता का उल्लेख है जो राष्ट्र की अखंण्डता बनाये रखने के लिये जो राष्ट्र हित में है। लेकिन अनावश्यक एंव कटुता उत्पन्न करने वाला साम्प्रदायिक हिंसा नाम का विधेयक राष्ट्रीय सलाहकार समिति जिसमे सिविल सोसायटी के लोग है संसद मे बहस के लिये पेश किया जा सकता है।दूसरी ओर टीम अन्ना की सिविल सोसायटी के नाम से सशक्त जनलोकपाल बिल पर सदन मे सभी पार्टी सांसदो ने हाय हुल्ला कर बवंडर किया और कुछ कांग्रेस के सांसदो ने खतरनाक परम्परा बन जाना तक बताया।लोकतंत्र के विषमता से उत्पन्न परिस्थिति मे संसद व सरकार यह स्पष्टता सुनिश्चित कर अवगत कराये कि लोक को वोट देने के अलावा भी कोई अन्य स्वतंत्र भूमिका है।

यदि सांसद यह स्वीकार करते हे कि हम जनता के प्रतिनिधि तो है लेकिन हमारे उपर संविधान है और संविधान के उपर समाज है तो लोक के साथ अब तक यह धोखा किया जाता है कि संविधान की सर्वोच्चता का प्रचार किया जाता है और संसद ने लोक की स्वीकति के बिना ही संविधान के अधिकार अपने पास रख लिये है। सासद अपना मनमाना वेतन बढा लेगें और जनता से वसूलेंगे । यदि लोक के किसी व्यक्ति से सडक किनारे लगी कोई टयूब लाइट टूट जाय तो कोट मे परेशान करके उस व्यक्ति से वसूलेगें किन्तु सदन मे सारा माइक तोड दे तो माईक का सारा पैसा जनता से वसूलेगें ?सांसद के अन्दर का यह अपराध न्यायालय की परिधि से बाहर भी रहेगा और जनलोकपाल की परिधि से भी बाहर रहेगां। इस प्रकार सासद ने लोक और तंत्र के बीच तंत्र का पक्ष मे गहरा भेदकर लोक के साथ धोका नही कर दिया है?

लोक ने सांसद को क्या अधिकार दिये है और सासद ने लोक के पास क्या अधिकार छोडा है वह सूची कहा है ? लोक ने सांसद को जो अधिकार दिये है उनमे से कोई अधिकार वापस चाहते है तो क्या प्रावधान है और आपकी मर्जी के बिना संविधान मे संशोधन चाहते है तो क्या प्रावधान है? यह स्पष्ट बताया जाये कि आप लोक के मैनेजर के रूप मे है या मालिक के रूप मे है या संरक्षक के रूप मे है?

उपरोक्त विषय तथा इन विन्दुओं पर ससद एवं सरकार वास्तविकता को स्पष्ट करने की कृपा करें क्योकि अन्ना जी के आंदोलन के प्रचार व प्रसार से देश की जनता एवं युवा वर्ग जाग्रत हो गया ह । अब चौसठ वर्ष तक लोकतंत्र के नाम पर जनता के धन की लूट और तंत्र की तानाशाही

सहन करने मे जनता असमर्थ लग रही है।क्योकि तीस वर्ष से लोक स्वराज्य के प्रेरणा स्त्रोत बजरंग मुनि जी भ्रष्टाचार अपराध एवं आतंकवाद की समाप्ति के लिये लाक स्वराज्य की स्थापना के लिये प्रयत्नशील है।

एव व्यवस्था परिवर्तमंच के संरक्षक व व्यवस्था परिवर्तन मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य पंकज देश मे गरीबो की स्वावलंबता एवं आर्थिक मजबूती के लिये प्रत्येक नागरिक को प्रतिमाह सुरक्षा पेन्शन दिया जाना सुनिश्चित किया जाय। और लोक स्वराज्य की स्थापना की जाय इस आशय ये व्यवस्था परिवर्तन मंच पूरं देश मे जनजागरण मे प्रयासरत है।

अतः आप महानुभावो से अनुरोध है कि लोक औत तंत्र के संबंधो का पुनर्निधारण कराने तथा लोक स्वराज्य की स्थापना करने तक देश की जनता व्यवस्था परिवर्तन मंच एवं लोक स्वराज्य अभियान के साथ संर्घषरत है। इसलिये सासद व सरकार को निदशित करने का कष्ट करें। लाक को यह अवगत कराया जाये कि वोट देने के अतिरिक्त लाक की कोई अन्य भूमिका भी है । की गयी कार्यवाही से अवगत कराने का कष्ट करे।

मुख्य न्यायधीश सर्वोच्च न्यायालय महोदय की सेवा मे इस आशय के साथ प्रस्तुत है कि उपरोक्त विषय एवं बिन्दुओ पर लोक एवं तंत्र के कर्तव्य एवं अधिकारों की समीक्षा कर अवगत कराने का कष्ट करे।

2 श्री रामकृष्ण पौराणिक सागर मध्य प्रदेश

आपने ज्ञान तत्व मे लोक संसद का महत्वपूर्ण सुझाव दिया है। उस सुझाव के क्रमांक एक पर मेरा सुझाव है कि लोक सांसद का चुनाव पांच वर्ष मे एकबार नवम्बर से फरवरी के बीच कराना अधिक सुविधाजनक होगा।

क्रमांक दो, तीन, चार, पांच सभी बिल्कुल ठीक है। वैसे इन सभी प्रस्तावो पर आगे और चर्चा होगी ही। जहॉ तक भ्रष्टाचार और ग्राम आधारित तंत्र का समाजोकरण है इसका चिंतन वर्तमान शासनकर्ताआ के मन मे नही है वे पश्चिमी विचारो से अत्याधिक प्रभावित है। लोकतंत्र की धारणा उनके चिंतन और गांधी जी के चिंतन मै सदैव भिन्न होने के कारण देश गरीब और अमीर भारत के दो रूप मे बतलाया गया है। मुख्य कार्य लागो को बेरोजगारी और गरीबी से मुक्त कराना और समाज मे सच्चा वर्ग हीन शोषण मुक्त समाज बनाना ही है। समाज को प्रमुखता देकर ज्ञान तत्व ने जो पूरी तरह जागृत कर दिया है इसका असर क्रमशः बढ़ रहा है। देश इसी माग से तथा अहिंसात्मक परिवर्तन से यशस्वो होगा। भ्रष्टाचार का विरोध सरकार से अधिक बहुराष्ट्रीय कंपनी और बडे छोटे अफसर करते है। मंत्रो व सरकार इन्ही से प्रभावित होकर कार्य करते ह। अब मीडिया ने लोक जागरण का नया अध्याय भी इसमे जोड दिया है यद्यपि मीडिया पूर्ण तटस्थ नही है। ज्ञान तत्व के चिंतन अभियान से मै जुडा रहना चाहता हूॅ यद्यपि यह निश्चित नही कर पा रहा हूॅ कि इसमे किस प्रकार योगदान करू। लोगो तक विचार अपनी सर्पक सीमा मे पहुचाना और उनसे विचार –विमर्श करता हूॅ पर आपका कार्य इससे बहुत आगे है । सरकार की नोयत या इच्छा कुछ भी हो वह जाग्रोत जलमत को दबाकर नही रख सकती। आश्यर्च है दिल्ली हाई कोर्ट की इतनी बडी दुखद घटना के बाद भी दिग्विजय सिंह चुप्पी साधे रहे । उन्ह आतंकवाद या नक्सलवादियो से क्यो लगाव है? यह एक रहस्य ही है।

उत्तर— लोक संसद संबंधी मेरा प्रस्ताव अब तक व्यक्तिगत है। नौ अक्टूबर के सम्मेलन मे इस प्रस्ताव पर विस्तृत चर्चा होकर इसे अन्तिम रूप देगें । ज्ञान तत्व दो सौ चौतीस मे रिर्पोट जा सकती है।

आपकी उम्र अधिक होते हुए भी आप इतना चिन्तन और चिन्ता करते है यह हमारी सहायता ही तो है । सच्चाई यहो है कि यदि ज्ञान तत्व इतना आगे तक बढ पाया है तो उसका श्रेय आप सबको ही जाता है। आप कुछ और पाठको के नाम पते भेज सकते है । वैसे बीस दिसम्बर को दोपहर पूर्व सागर मे तथा दोपहर बाद छत्तरपुर मे मै रह सकता हूॅ । आपको सूचना ज्ञान तत्व से मिल जायगी। आप कुछ नये लोगो को आने हेतु प्रेरित कर सकते है।

सरकार का काम न वग हीन समाज बनाना है न ही गरीबी दूर करना। सरकार यदि वर्ग निर्माण, वर्ग विद्वेष और वर्ग संघर्ष के प्रयास बंद कर दे तो समाज वर्ग मुक्त हो सकता है। हजार वर्ष की गुलामी काल मे राजाओ ने वर्ग निर्माण किया किन्तु वर्ग विद्वेष वर्ग संघर्ष नही किया। स्वतंत्रता के बाद की सरकारों को वर्ग निर्माण बंद करके समान नागरिक संहिता लागू कर देनी चाहिये थी। किन्तु सरकारों ने शुरूआत ही वर्ग मान्यता से की। अम्बेडकर जी सामाजिक वर्ग विभाजन को एक समाधान के रूप मे देखते थे तो नेहरू जी समाजवाद के नाम पर आर्थिक रूप से वर्ग निर्माण की रट लगाये हुए थे। इससे दोनो को वर्ग प्रशंसा मिली । समाज को बाटों और राज करो की नीति से दोनो बहुत लाभान्वित हुए। अम्बेडकर जी आज भी एक वर्ग विशेष मे भगवान की तरह पूजे जाते है । नेहरू जी की तो बात ही और है । उनके बाद भी उनका खानदानी राज इस बात का स्पष्ट प्रमाण है । यह सब उपलब्धि वर्ग निर्माण की ही है। अब तो एक भी ऐसा नेता नही दिखता जो वर्ग मुक्ति की बात करे । भारतीय जनता पार्टी भी नही । वह भी समान नागरिक संहिता की बात के साथ साथ हिन्दू मुसलमान वर्ग निर्माण की चर्चा करती रहती है।

गरीबी और अमीरी दूर हो ही नही सकती। यह अंतर कम हो सकता है यदि सरकार इस अंतर को बढाने की कोशिश न करे। श्रम और बुद्धि के बीच अंतर बढाने की कोशिश लगातार होती रही है। ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को कमजोर करके शहरी अर्थ व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है। गरीबी रेखा बनाते समय भी गांव का गरीब छब्बीस रूपया और शहर का बत्तीस रूपया। जब आप देख रहे है कि गांव उजड रहे है और शहर बस रहे है, आम नागरिक शहरो की ओर पलायन कर रहा है तो आप गांव क गरीब को भी शहर के समान ही बत्तीस रूपया घोषित कर दे तो क्या गांव वालों का आकर्षण शहर की ओर नही घटेगा? शहर के लोगो के साथ क्या अन्याय हो जायगा ऐसी समान गरीबी रेखा से । आखिर गांव छोडकर शहर की ओर जाना उनकी कोई न कोई तो मजबूरी है। आप वह मजबूरी दूर करने की कोशिश करे यह बात तो ठीक है किन्तु आप साथ ही ग्रामीण भत्ता मानकर ही शहरी गरीबी रेखा के समान ही ग्रामीण गरीबी रेखा भी कर दे तो इसका बहुत लाभ होगा। आपने नरेगाा योजना शुरू करके पहल की है इसके लिये हम आपकी प्रशंसा करते है। इसी तरह आप गरीबी रेखा का फर्क भी खतम कर दे तो यह ग्रामोण तोहफा ही माना जायगा।

3 श्री अरविन्द प्रकाश , मढई चौक , बदायु उत्तर प्रदेश

प्रश्न— बाबा रामदेव की आयुर्वेदिक दवाइया बहुत मंहगी है। दंत क्रान्ति का टूथ पेस्ट एक सौ ग्राम का मूल्य तीस रूपया है जबकि दूसरी कम्पनियों का इससे बहुत सस्ता है । होना तो यह चाहिये था कि रामदेव जी का सामान सस्ता हो।

उत्तर– किस कम्पनी का सामान सस्ता हो यह विचार करना हमारा विषय नही। आप रामदेव जी का मंहगा टूथ पेस्ट खरीदते ही क्यो है जबकि आपको उससे अच्छा सामान कम कीमत मे उपलब्ध है । रामदेव जी की कम्पनी कोइ सरकारी दुकान तो है नही जहॉ आप वह सामान उसी मूल्य पर खरीदने को मजबूर है। आप यदि रामदेव जी की कंपनी का सामान खरीदने को प्राथमिकता देते है तो स्पष्ट है कि उसका कोई न कोई आधार अवश्य होगा और यदि किसी वस्तु मे कोई विशेषता है तो मूल्यो मे अंतर स्वाभाविक है । मेरे विचार मे यह चर्चा विशेष महत्व नहो रखती है क्योकि खरीदने की स्वतंत्रता आपकी है।

4 श्री योगिन गुर्जर 476 साखर पेठ शोलापुर महाराष्ट्र

विचार– ज्ञान तत्व दो सौ अठाइस मे लखनउ के पसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री जगदीश जी गांधी द्वारा प्रारंभ आत्महत्या संबंधी विचार मंथन एक अच्छी शुरूआत है। हमे विचार करना होगा कि कोइ व्यक्ति आत्म हत्या क्यो करता है? प्रत्यक्ष कारण भलें ही अलग अलग दिखते हो किन्तु सबके मूल मे है व्यक्ति के भावनांक का कम होना जिसे हम ई क्यू अर्थात इमोशनल क्यूटेन्ट कहते है । वर्तमान समय मे सबसे अधिक आत्महत्या किसान करते है। उसके बाद कम्पयूटर इंजोनियर तथा तीसरा नम्बर विधार्थियो का है। कहा जाता है और सरकार भी मानती है कि कर्जो के बोझ से किसान आत्महत्या करता है, इसलिये करोडो का पैकेज सरकार देती है फिर भी आत्महत्या कम नही हुई । किसानो के बीबी बच्चे तो उसी हालात मे जी रहे है। पैसे की समस्या तो उनके सामने भी बनी है। अपितु घर के प्रमुख व्यक्ति के निधन हो जाने से यह समस्या और बढ जाती है । तब भी वे लोग जी रहे है। पैकेज देकर उन्हे अपंग बनाया जा रहा है। जरूरत है उन्हे समझाने की कौन सी फसल किस मौसम मे बोए और कैसे उसकी देखरेख करे । आदरणीय प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह जी दो वर्ष पहले खुद किसानो के पास विदर्भ महाराष्ट मिलने पहुचे थे जहॉ पर सबसे ज्यादा किसान आत्महत्या किये थे। इसकी संवेदन शीलता कृषि मंत्रालय का क्यो नही दिखा सके ? किसानो की आत्महत्या के जिम्मेदार उस क्षेत्र के प्रमुख कृषि अधिकारो व तहसीलदार स्वयं है। साफ्टवेयर इंजोनियर बुद्धिमान भी है तथा पैसा भी होता है फिर भी व आत्महत्या क्यो करते ह? कम्यूटर मे इंजीनियरिंग क्या है ? इंजीनियर दिन मे 10 से 12 घंटे ए सी कमर मे बैठकर आखे गडाये काम करता ह। पैसा होते हुए भी काम का अलग तरीका समाज से बढती दूरी है परिवार के साथ कम समय बिताना फास्ट फूड का बराबर सेवन इसका सीधा असर स्वास्थ पर पडता है इस आत्महत्या का सीधा निष्कर्ष यह है कि ये लोग इमोशनल होते है।

विधार्थियों पर हमारे ग्रुप ने भी कुछ चिन्ता की तथा हमारे ग्रुप ने यह कहा कि सोलापुर मे एक भी विधाथी आत्महत्या नही करेगा। यह अभियान पिछले दो साल से चल रहा है। स्कूल कालेज तथा सामाजिक संस्थाओ द्वारा आयोजित कार्यकमो मे विधार्थियो से संवाद तथा मेलजोल बढा रहे है। हमारे कार्यो के अच्छे परिणाम आ रहे है। इस विषय पर स्वतंत्रता स लेकर आजतक अनेक शिक्षा शास्त्रियो ने अपने विचार व्यक्त किये है। किन्तु आज तक अच्छे परिणाम प्राप्त नही हुए है। बच्चे को बचपन से ही ना सुनने की आदत होती ही नहो है। क्योकि माता पिता दोनो कमाते है तथा बच्चे के रोने धाने की बात एक मिनट भी बर्दास्त नही कर सकते। बच्चे की बात जुबान पर आते ही उसकी पूति हो जाती है। हमारी पीढी बच्चो के सामने अच्छे आदर्श नही रख पाई। बच्चे को दिल से लगना चाहिये कि हमे हर सफलता और असफलता के वक्त समीक्षा करनी है। मेरा परिवार समाज यह विश्वास दिलाने मे पीछे है। यह कमी हमारे अंदर है। परीक्षा की जिन्दगी खत्म होती है तब जिन्दगी की परीक्षा शुरू होती है यह बात हमे विधार्थियों को समझानी चाहिये । जिस विधार्थी का कम अंक मिलते है या पढाई मे पीछे है उस विद्यार्थी को किष्टिव्हिटी अधिक होती है। इसी किष्टिव्हिटी के बदलते वे जिन्दगी मे काफी उचाई तक जाते ह यह हमारा सर्वे है । हम लोग आई॰क्यू॰ पर ध्यान देते है यह भी वुद्धिजावियो की चाल हो सकती है। वुद्धिमता आई॰क्यू॰ से भी उपर भावनांक ई॰क्यू॰ और हर वक्त नया पहलू ढूढना स॰ क्यू॰ को महत्व देना चाहिये। इसमे यह निष्कर्ष निकला कि विधार्थियो की आत्महत्या रोकना किसान और इंजीनियर की तुलना मे काफी आसान है। अभिभावको को अपने बच्चे की जुबान से निकली हुई चीज को तुरंत नही हाजिर करना चाहिये , उसे थोडा इंतजार और संघर्ष करने देना चाहिये। स्कूल जाने से पहले स्वनिर्णय प्रकिया शुरू करनी चाहिये। स्वनिर्णय करने को क्षमता का बढावा दे सकते है। दूकान मे चाकलेट खरीदने जाय बच्चे के सामने 10 प्रकार की चाकलेट रखो और उससे 1 मिनट मे अपनी पसंद की 1 चाकलेट लेने को कहो तथा दिन के एक वक्त संपूर्ण परिवार एक साथ भोंजन करे तथा उस वक्त अभिभावक दिन भर की घटी घटनाओ का विवरण सबके सामने रखे । बच्चे को भी साथ मे समझाये। अभिभावक बच्चो की क्षमता को भाप ले समझ ले। अपनी अपेक्षा ना थोपे । मेरी श्री जगदीश गांधी जी से विनती है कि वे अपने कुछ सहयोगी शिक्षक के साथ मिलकर कुछ ठोस कदम उठाये । शिक्षा प्रणाली बदलना होता रहेगा। तब तक हम एक भी विधार्थी की आत्महत्या ना होने दे । शिक्षा का प्रमाण बढ रहा है किन्तु ज्ञान का प्रमाण कम हो रहा है। इसी कारण वश इस देश मे संशोधन कम हो रहा है। शिक्षा प्रणाली पर अलग से चर्चा विचार विनिमय हो सकती है। कुल मिलाकर आत्म हत्या का यह विषय समाज का है सरकार का नही

उत्तर – मेरे विचार मे आत्महत्या का कारण भावनांक की कमी न होकर भावनांक की वृद्धि है। फिर भी आत्महत्या का संबंध भावनाओ के साथ ही जुडा है। यदि विचार और भावना के बीच संतुलन हो तो आत्महत्या नही होतीं । विषय बहुत गंभीर है और मै पूर्व मे ही अपनी धारणा व्यक्त कर चुका हूँ इसलिये दुबारा वही बात लिखना उचित नहीं।

5 श्री जगदीश गांधी, सीटी मोन्टेसरी स्कूल लखनउ

विचार– हमे दूसरो के गुण, अपनी गलतियों को देखने का स्वभाव निरंतर प्रयास के द्वारा विकसित करना चाहिये । हमे अपन जीवन का बहुमुल्य समय दूसरो की कमियों को देखने मे कतई नहो गवांना चाहिये। यदि गलतियॉ देखने का बहुत मन करे तो अपनी दृष्टि स्वयं अपनी ओर मोड लेनी चाहिये । दूसरो के दोष देखने से हमारी आत्मा कमजोर हो जाती है तथा अपने दोष देखकर उसमें सुधार करने से हमारी आत्मा बलवती हो जाती है। एक सुन्दर प्रार्थना है– हे अस्तित्व के पुत्र तू स्वंय के दोषो को भला कैसे भूल गया। और दूसरो के दोषो को देखने मे तूने अपने को व्यस्त कर लिया। जो कोई भी ऐसा करता है वह मेरे श्राप का भागी बनता है। कबीर का एक दोहा है बुरा जो देखन मै चला बुरा न मिलिया कोय, जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न होय। इस प्रकार संसार का सिर्फ एक ही कोना है जिसे सुधार सकने के बारे मे हम निश्चित हो सकते है और वह है हमारा अपना स्वयं का व्यक्तित्व । इसलिय हमे अपने अंदर अपमान सहने की शक्ति धैयपूर्वक विकसित करनी चाहिये।

किसी भी बुरे से बुरे व्यक्ति मे भी कुछ न कुछ अच्छे गुण अवश्य होते है। हमे उस व्यक्ति मे निहित उन अच्छे गुणो को देखना तथा उसकी प्रशंसा करनी चाहिये। हमारे इस सकारात्मक प्रयास से हम देखेंगे कि उस व्यक्ति मे अच्छे गुणो की संख्या निरंतर बढती जा रही है। उदाहरण के लिये एक गिलास मे आधा पानी भरा है । एक व्यक्ति गिलास आधा पानी से भरा देखता है तो दूसरा व्यक्ति गिलास आधा पानी से खाली दखता है । जीवन मे खालीपन नही वरन भरापन देखना अच्छा दृष्टिकोण माना जागेगा। कहते है कि विश्व विजय के लिये निकले सिकन्दर का जब अंतिम समय आया तब उसने अपने लोगो को आदेश दिया कि मेरी अर्थी ले जाते समय मेरे दोनो हाथ बाहर निकाल देना ताकि लोग देख सके कि सिकन्दर खालो हाथ इस संसार मे आया था और संसार से खाली हाथ जा रहा है। जिन्दगी मे यदि हम सुख चाहते है तो हमे दूसरो के जीवन को ज्ञान प्रसन्नता एकता तथा शान्ति से भरने का प्रयास करना चाहिये।

इस संबंध मे आपके विचार क्या है?

उत्तर – मानव समाज आपसी संबंधो का जाल है। इसमे भिन्न भिन्न प्रकार के व्यक्तियो के साथ संबंध आते है। स्वाभाविक है कि हमारा व्यवहार भी सबके साथ समान नही हो सकता क्योकि हमारी क्षमता भी भिन्न होती है और सामने वाले की नीयत भी भिन्न हो सकती है । अपनी क्षमता और सामने वाले की नीयत का आकलन करने के बाद ही व्यवहार का निर्धारण करना उचित होता है।

एक कथानक है कि एक कसाई गाय को कत्ल के उद्देश्य से पकडना चाहता है। छिप गई गाय के विषय मे वह मुझसे जानना चाहता है। मेरा उत्तर क्या हो ? मेरे विचार मे अपने स्वभाव का आकलन करके उत्तर देना चाहिये। गाय की जान बचाना हमारा लक्ष्य है किन्तु अपनी क्षमता का आकलन करके ही मार्ग चुनना चाहिये। यदि मै ज्ञान प्रधान हूँ तो मुझे न झूठ बोलना चाहिये न सच बताना चाहिये। मेरे लिये उचित है कि मै अपने ज्ञान के बल पर उसके हृदय परिवर्तन का प्रयास करू। किन्तु न असत्य बोलू न बल प्रयोग करू । यदि मै शक्ति प्रधान हूँ तो उस कसाई को भयभीत करके भगा दूँ। मुझे लम्बी चौडी ज्ञान को बातें नही करनी चाहिये। यदि मै व्यावसायिक बुद्धि का हूँ तो गाय को सुरक्षा के लिये मै असत्य भी बोल सकता हूँ । गाय यदि उत्तर की ओर गई है तो उसे दक्षिण की ओर बताया जा सकताहै।

हमें अपने गुण कर्म स्वभाव के आकलन के साथ साथ सामने वाले की नीयत का भी आकलन करना पडता ह कि सामने वाला मित्र है या शत्रु । मित्र और शत्रु के साथ व्यवहार समान नही हो सकता। गीता मे समान व्यवहार की जो बात कही गई है वह अपने आकलन के आधार पर है। गीता मे यह नही कहा है कि अर्जुन युद्ध भूमि मे विरोधियो के गुण मात्र देखते रहे और दोषो की चर्चा न करे। मेरा मत इस संबंध मे यह है कि हमे किस व्यक्ति के गुणो को प्रधान देखना चाहिये और किसके दोषो को मुख्य रूप से देखना चाहिये यह अपने स्वभाव के आकलन सामने वाले की नीयत तथा देश काल परिस्थिति अनुसार तय करनी चाहिये न कि जगदीश गांधीर जी के स्वभाव अनुसार ।

6 पवन कुमार जनसत्ता 13 मार्च 2011

पिछले चार पांच महीनो से देश मे जो कुछ हो रहा है और उन पर एक तरफ जैसी प्रतिकियाए हो रही है और दूसरी तरफ कोई जोरदार प्रतिकार नही हो रहा, उससे मन खट्टा है। भ्रष्टाचार आम हो गया है। किस पर भरोसा करे समझ नही आता। पत्रकार जो भ्रष्टाचार की बखिया उधेडते है उन पर भी जो थोडा बहुत भरोसा था राडिया की बदौलत नही रहा। इसस पहले कोई प्रधानमंत्री इतनी बेचारगी मे नही रहा होगा। वे कितने इमानदार है और कितने मजबूर यह कहना कठिन है। दोष कभी साझा सरकार की मजबूरियो को कभी व्यवस्थागत कमजोरियो का कभी अपने नोचे काम करने वाली की लापरवाही को देकर वे अपना पल्ला झाड लेते है । इस पल्ला झाडने को वे जिम्मेदारी लेना कहते है। यह जिम्मेदारिया की नई परिभाषा है। प्रधानमंत्री की आखिर जिम्मेदारियॉ क्या होती है इस पर वे नही बोलते । कोई भी खुल कर नही बोलता।

शायद उनकी मजबूरियां कुछ ज्यादा ही बडी है और एसी कि जिस वे खुल कर बोल भी नही सकते यह उनकी सबसे बडी मजबूरी है । जगजाहिर है कि उन्हे सिर्फ कुछ समय के लिये कमान दी गई है। सही समय का इंतजार है कमान कभी भी वापस ले ली जयगी । असली कमान किसी और के हाथ मे है वे तो सिर्फ मुखौटा है। हमे अपने ईमानदार प्रधानमंत्री की मजबूरियॉ समझनी चाहिये। वे बेचारे इतनी मिन्नत कर रहे है । मगर क्या करे? हम इमानदार प्रधान मंत्री के प्रति कितनी भी सहानुभूति रखे पर मन से निराशा और हताशा के बादल नही छटते। उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी का देश क्या करे?

दूरदर्शन के चैनलो को देखे तो इस बात की चर्चा ज्यादा होती है कि कांग्रेस या प्रधानमंत्री के बयान पर भाजपा ने क्या प्रतिक्रिया की। उनकी रणनीतियां क्या है । इसमे असली मुद्दा कही गायब हो जाता है। देश गायब है । मुद्दे जैसे राजनीतिक दलो की क्रिया प्रतिक्रिया तक सीमित हो गये है। भाजपा मे तो पहले से समझदारी और विचार का दिवाला है। वाजपेयी जी क्या अलग हुए इस दल की रही सही समझ भी गायब हो गई लगती है। उपर से अपना घर भी ठीक से संभल नही रहा। घपलो मे भी वे थोडा बहुत ही पीछे होगे। कर्नाटक मे जो हुआ वह तो हमने देख ही लिया।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करूणानिधि के कारनामो से बखेडा शुरू हुआ। उन्होने सरकार से समर्थन वापस लेने की धमकी दे दी। पर समाजवादी मुलायम सिंह तैयार खडे है। समर्थन देने को इन्हे सिर्फ मायावती का सत्ता से हटाने से सरोकार रह गया है। किसी भी तरह उत्तर प्रदेश मे इज्जत बच जाय और किसी चीज से क्या मतलब । लोहिया और समाज वाद तो सिर्फ अपने के लिये है। कोई राम नाम जपता है तो हम उसे तिरस्कार से देखने लगते है। पर इस जपने मे समझ भले ही न हो , आस्था तो है। इनके समाजवाद और लोहिया का नाम जपने मे न तो समझ है न ही आस्था। उनका असली चेहरा तो सैफई के मेले और अपने पुराने सलाहकार और दोस्त अमर सिंह की संगत मे हम देख ही चुके है।

मार्क्सवादियो की बंगाल और केरल मे अपनी मुश्किले है। ज्योति बाबू के बाद वे बेचारे अपने को ही संभालने मे लगे है। बाको किसको सुध ल? खुद को ही संभाल ले तो बडी बात होगीं। और किस किस का नाम ले? लालू जी ? पासवान जी? मायावती? जयललिता? कही कोई आशा नही बची? ममता से भी कोइ उम्मीद नही दिखती । सत्तर के दशक मे जब जयप्रकाश जी कलकत्ता आये थे तो कालेज स्ट्रीट मे ये उनकी गांडी पर चढ गयी थी और बडी अभद्रता की थी । हिम्मत जो बडी चीज है, के अलावा उनमे कोई बडा सोच या सपना हो, अभी तक दिखाई नही पडा । वैसे भी उनकी नजर बंगाल से आगे नही जाती। नीतिश कुमार के बारे मे अभी कुछ कहना ठीक नही है। वे बिहार मे आगे कुछ कर ले तो बात आगे बढ सकती है। अभी उन्हे विहार को ही संभालना है। और वे भी इस बात को बखूबी समझते है। आज हालत यह है कि आम आदमी को राजनैतिक दलो और राजनेताओ से कोई उम्मीद नही है। यह एक खतरनाक स्थिति है। इस प्रकार की निराशा शायद पहले कभी नही रही।

सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश के बारे मे रोजाना खबरे छप रही है। फिर भी ऐसा लगता है कि न्यायपालिका ही देश चला रही है। यह भी कोई खुश होने को बात नही । आज तक किसी बडे अपराधी को कोई बडी सजा हुई हो , याद नही आता। क्वात्रोकी को छोड ही दिया हमने । हसन अली का नाम अभी अभी अखबारो मे आना शुरू हुआ है। राजेन्द्र पुरी कब से इस पर कह रहे है। दिल्ली के बडे लोगे को बडे अखबारो वाले राजनेता व्यापारी हमारे अफसरान, सब इनसे पहले से वाकिफ होगे, जैसे राडिया से होगे। उनके लिये हसन अली कोई नई चीज नही । हसन अली का नाम तो साधारण आदमी के लिये नया है।

मुम्बई मे जब 2008 मे हमला हुआ तो लोग किसी मंत्री का नाम लुके छिपे लेते थे। अब भो लिया जाता है। जो दिल्ली की सत्ता की गलियो मे घूमते है लूटियन की दिल्ली के सरकारी घरो मे जिनका रोज का आना जाना है ,उन्हे सब पता है। वे सब नाम और सारे कारनामे जानते है। इन जानकारो मे बडे अखबारो के मालिक और बडे पत्रकार भी शामिल है। दिल्ली मे किसी रात किसी बडी दावत मे चले जाये जहॉ माक्सवादीं पाटी से लेकर कांग्रेस के बाबा लोग और अन्य नेता भाजपा के राजनेता पत्रकार बुद्विजीवो बडे व्यापारी बडे कलाकार बडे अफसरान आदि यानी वे लोग आते है जा दिल्ली की सरकार सीधे या परोक्षरूप से चलाते है तो शराब के साथ साथ ये सारे कारनामे आपको सुनने को मिल जाएगे। इसके लिये कोई सीबी आई की फाइलो को देखने की जरूरत नही । सबको पता है । फिर भी कुछ होता नही। सिवाय खबरो के बनने और लीपा पोती के। यह भी हमे पता है फिर भी हम रोजाना अखबारो मे यह सब पढते है और अपने का ज्यादा असहाय महसूस करते है। कही कोइ आकोश नही दिखता । हम लोग ठंडे पड गये है। शायद मिस्त्र से हमे कुछ सबक लेना चाहिये । डाक्टर लोहिया देश को गरमान की बात करते थे और यह भी कहते थें कि

भारत मे अंदरूनी दुश्मन से लडना हमे नही आता उनकी बात याद आतो है। सवाल उठता है कि इस निराशा की स्थिति मे हम क्या करे? हमारा गुस्सा इतना ठंडा क्यो है?

हाल मे कुछ लडके मुझसे मिलने आये। पहले हमारे ही स्कूलो मे पढाते थे। बुनियादी तालीम की तर्ज पर अपने यहॉ हम कुछ प्रयोग करते रहते है। थोडा बहुत महात्मा गांधी को समझने का प्रयास भर करते है। इन लडको पर उन प्रयासो का कुछ असर तो हुआ है। अब इन्हे सरकारी नौकरी मिल गई है वहॉ भी पढाने का ही काम है, नौकरी से बीस पचीस हजार रूपये महीना मिलने लगे है इससे वे खुश है पर अपने काम से विल्कुल उदासीन । काम मे मजा नही आ रहा। पहले यहॉ काम मे मजा आता था पैसे कम मिलते थे वहॉ उल्टा है । बातचीत करने आये थे बोले बच्चो को मूल्यपरक शिक्षा देने की बातें होती है बच्चे हमसे अखबार मे रोजाना छपने वाली खबरो के बारे मे पूछते है। मगर हमे समझ मे नही आता कि उनको क्या जबाब दे। मुझ भी समझ नही आया कि मै क्या कहूॅ । किसी को समझ आ रहा हो तो बताए।

उत्तर– छः माह पूर्व आपने जो लिखा वह यथार्थ था। आपने बिलकुल ही सही चित्रण किया । आप जैसे गंभीर विद्वानो के विचारो का प्रभाव हुआ कि देश की जनता पर ऐसा प्रभाव पडा जो आंदोलन अन्ना के रूप मे प्रगट हुआ । जनता निराश नही है। प्रयत्न करते चलिये परिणाम अवश्य ही अच्छे होगे। मै पुनः आपको धन्यवाद दू कि आपने संतुलित शब्दो मे बिना लाग लपेट के छः माह पूर्व अपनी बात रखी थी । आप बधाई के पात्र है।

7 श्री भारत डोगरा, प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री, आचाय कुल पत्रिका में लेख द्वारा

प्रश्न–यह समय सिद्ध है कि परमाणु उर्जा न तो साफ सुथरी है और न ही सस्ती। इसके अलावा दुर्घटना की स्थिति में होने वाले विनाश का आकलन कर पाना भी कठिन है। इसके विकिरण सैकड़ों–हजारों वर्षों तक पर्यावरण में विद्यमान रहेंगे और मानवता को नुकसान पहुंचाते रहेंगे। भारत के राजनीतिज्ञों ने परमाणु उर्जा विकास को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है और देश की सुरक्षा को दरकिनार कर दिया है।

भारत सरकार परमाणु उर्जा के तेज प्रसार का निर्णय ले चुकी है। नए परमाणु उर्जा संयंत्रों से अभी तक हम जितनी बिजली पूरे देश में प्राप्त कर सके हैं, उससे कहीं अधिक बिजली निकट भविष्य में मात्र एक परियोजना, महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के रत्नागिरी जिले में स्थित जैतापुरा जहां 1650 मेगावाट के छः संयंत्र लगाने से अथवा 9900 मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता से प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

इस विशालकाय परियोजना का विरोध वैसे तो स्थानीय लोग आरंभ से कर रहे हैं, पर जापान के फुकुशिमा हादसे के बाद इस विरोध न और अधिक जोर पकड़ा है। वैश्विक जन–विरोध को फुकुशिमा के हादसे के बाद बेहतर समझा जा रहा है और उसे अधिक व्यापक समर्थन मिल रहा है। परन्तु महाराष्ट्र सरकार के दृष्टिकोण में बहुत कम परिवर्तन आया है। वह इस परियोजना को हर हालत में आगे ले जाने के लिए तैयार लगती है। भारत सरकार के दृष्टिकोण में बस इतना सा फर्क आया है कि सुरक्षा पक्ष को थोड़ा सा और पक्का कर दिया जाए। स्थानीय लोग इतने से ही संतुष्ट नहीं हैं एवं वे इस परियोजना को रोकना चाहते हैं। स्थानीय संगठनों का यह विरोध सुरक्षा, आजीविका, पर्यावरण की रक्षा के लिए है जबकि राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए शिवसेना ने अलग से इस आंदोलन का राजनीतिक रंग दे दिया है।

सरकार और स्थानीय लोगों में परमाणु संयंत्रों संबंधी सोच में बुनियादी विरोध के कारण यहां बार–बार टकराव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस तरह के परमाणु संयंत्रों के बढ़ते विरोध के समाचार हरियाणा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों से भी मिलते रहे हैं जहां नए परमाणु संयंत्र प्रस्तावित हैं। जिस पर मुद्दा केवल स्थानीय लोगों के विरोध का नही हैं। कई ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ व यहां तक कि सरकार में जिम्मेदार पदों पर कार्य कर चुके विशेषज्ञ भी जैतापुर परियोजना के विरूद्ध आवाज उठा चुके हैं। साथ ही इन विशेषज्ञों ने परमाणु उर्जा के तेज प्रसार के विरूद्ध चेतावनी भी दी है।

फुकुशिमा हादसे ने एक बार फिर याद दिला दिया है कि परमाणु उर्जा के संयंत्रों की दुर्घटनाएं कितनी गंभीर हो सकती हैं, उनसे कितनो व्यापक व दीर्घकालीन क्षति हो सकती है। चेरनोबिल दुर्घटना के असर के बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ की परमाणु विकिरण पर गठित वैज्ञानिक समिति ने बताया है कि इसके कारण कैंसर के 34000 से 140000 अतिरिक्त मामले सामने आए, जिनसे 16000 से 73000 मौतें हुई। चेरनोबिल दुर्घटना के बाद पश्चिमी यूरोप में कोई भी नया परमाणु बिजली संयंत्र नहीं स्थापित किया गया। जर्मनी ने यहां तक कहा कि जो परमाणु संयंत्र पहले से स्थापित किए गए हैं उन्हें निश्चित समय अवधि में हटाया जाना चाहिए। यूरोपियन यूनियन में जहां वर्ष 1979 में 177 परमाणु उर्जा संयंत्र सकिय थे वहां इस समय मात्र 143 संयंत्र सकिय है।

8 श्री अनिल कुमार, आचार्य कुल पत्रिका के लेख द्वारा

प्रश्न–परमाणु उर्जा संयंत्रों से होने वाले संभाव्य हादसों को फुकुशिमा परमाणु संयंत्र दुर्घटना ने नई परिभाषा दे दी है। वैश्विक परमाणु उद्योग इस दुर्घटना के दुष्परिणाम छिपाने के लिए दिन रात एक किए हुए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि भारत अपनी उर्जा जरूरतों पर लगाम लगाए और ऐसी तकनीकें व जीवनशैली विकसित करे जो न्यूनतम उर्जा खपत करती हों।

दुनिया की तमाम जरूरतों को पूरा करने के लिए ईजाद की गई तकनीकें पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम के बिना आविष्कारकों तक के लिए भी घातक हो जाती है। कई बार तमाम सुरक्षा इंतजाम धरे रह जाते हैं और विनाशलीला अपना असर दिखा जाती है। जापान में ऐसा ही हुआ है। परमाणु रिएक्टरों से निकल रही खतरनाक विकिरणें मानकों से एक करोड़ गुना अधिक हा गई है। इन हालतों ने परमाणु उर्जा पर अंतर्राष्ट्रीय सवाल और चिंता उत्पन्न कर दी है।

फुकुशिमा में हुए इस हादसे के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भारत में भी परमाणु संयंत्रों की सुरक्षा प्रणाली और तकनीकों को समीक्षा के निर्देश दिए हैं। लेकिन उन रिएक्टरों की बात नहीं की गई, जिन्हें खरीदने का करार संसद को अंधेरे में रखकर 2008 में किया गया था। इससे भी बड़ी भूल यह है जिनका परीक्षण अब तक किसी भी देश में नहीं किया गया है। एक और सवाल यह है कि हमारे सामने तारापुर और रावतभाटा परमाणु संयंत्रो के दुष्परिणाम होने के बावजूद सुरक्षा मानकों की अनदेखी क्यों जारी है? परमाणु रिएक्टरों के खरीददार भारत और विकेता अमेरिका में भारी साठगांठ और भ्रष्टाचार के बीच यह करार हुए हैं। इस बात की पुष्टि विकीलीक्स की खबरों से भी हुई है।

राजस्थान में चंबल नदी के किनारे 200 मेगावाट क्षमता के रावतभाटा परमाणु उर्जा संयंत्र की रिपोर्ट में इसके कई घातक परिणाम सामने आए हैं। संयंत्र की स्थापना के 20 साल बाद सम्पूर्ण कांति विद्यालय, बेड़छी, सूरत ने आसपास के गांवों में अध्ययन किया। इसके अनुसार गांवों में जन्मजात विकलांगता व प्रजनन क्षमता प्रभावित होने के कारण निःसंतान जोड़ों की संख्या बढ़ी है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि हड्डी का कैंसर, मृत और विकलांग नवजात, गर्भपात और प्रथम दिवसीय नवजातों की मौतों के मामले भी बढ़े हैं।

परमाणु उर्जा के खतरो का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि अमेरिका ने अपने यहॉ सन् 1978 के बाद एक भी नया संयंत्र स्थापित नहीं किया है। इधर भारत में 1987 के बाद हुई पांच परमाणु घटनाओं के बावजूद सरकार नहीं चेती और नए परमाणु संयंत्र स्थापित करने

पर आमादा है। विदशी कंपनियों को बाजार दर पर बिजली उत्पादन करने की कोई बाध्यता भारत की ओर से नहीं है। इनके रिएक्टरों से उत्पन्न होने वाली महंगी बिजली को भारतीय करदाताओं के धन से अनुदान दिया जाएगा।

उत्तर–मैं आपकी शंकाओं से सहमत हूँ। परमाणु संयंत्रों के विकिरण के गंभीर खतरे हैं। किन्तु प्रश्न यह है कि विकल्प क्या है? विचारणीय मुद्दा यह नहीं है कि परमाणु उर्जा खतरा मुक्त है या नहीं। विचारणीय प्रश्न यह है कि हम क्या करें? या तो हम कृत्रिम उर्जा की खपत कम करें अथवा डीजल पेट्रोल पर अपनी निर्भरता बढ़ावें। और यदि दोनां ही संभव या उचित नहीं तो हम विद्युत उत्पादन हेतु क्या पहल करें?

मैं अनिल कुमार जी को तो नहीं जानता किन्तु भारत डोगरा जी को हमेशा पढ़ता रहा हूँ। जब भी पन बिजली उत्पादन हेतु किसी बड़े बांध का प्रस्ताव आता है तो आपका पर्यावरण प्रेम जग उठता ह। आप उक्त बिजली उत्पादन के विरूद्ध कलम उठा लेते हैं। जब कोयले से बिजली पैदा करने की बात उठती है तब भी उसके खतरे गिनाने शुरू कर दिये जाते हैं। जब परमाणु बिजली की बात उठती है तब आपके कई लेख छप ही चुके हैं। जब डीजल पेट्रोल बिजली की भारी मूल्य वृद्धि करके खपत कम करने का प्रस्ताव आता है तब भी आपका विरोध जग जाहिर है। मैं आज तक नहीं समझ सका कि आप जैसे अनेक लोग चाहते क्या हैं? आप दोनों विद्वानों तथा अन्य अनेक विद्वानों ने कहीं डीजल पेट्रोल से परमाणु संयंत्रों की तुलना नहीं की। दुनिया के अनेक देशों में डीजल पेट्रोल विस्फोट के गंभीर परिणाम हो चुके हैं। एक दो नहीं, बहुत बड़ी संख्या में। दुनिया जानती है कि डीजल पेट्रोल मिट्टी तेल बिजली की अपेक्षा कई गुना ज्यादा प्रदूषण फैलाते हैं तथा खतरनाक भी हैं। किन्तु आप कभी उन खतरों की चर्चा नहीं करते। लेकिन किसी भी रूप में डीजल पेट्रोल पर निर्भरता कम करने का प्रयास होता है तब आप इस तरह चट्टान सरीखे खड़े होते हैं जैसे कि आपने इस विरोध का बीड़ा उठाया हुआ हो। हमें समग्र चिन्तन करना होगा। हम डीजल पेट्रोल की खोज के लिये नये नये कुओं की खुदाई के लिये लगातार प्रयत्न बढ़ाते रहें, खाड़ी देशों से डीजल पेट्रोल का आयात भी बढ़ाते रहें तब तक आप बिल्कुल चुप हैं किन्तु बिजली उत्पादन की चर्चा होते ही आप मैदान में कूद पड़ते हैं। आखिर इसका राज क्या है?

मेरा अब भी स्पष्ट मत है कि 1. कृत्रिम उर्जा की खपत घटनी चाहिये। 2. डीजल पेट्रोल की खपत को बिजली की खपत में बदलना चाहिये। 3. परमाणु या कोयला आधारित बिजली संयंत्रों के स्थान पर सौर उर्जा या अन्य प्राकृतिक उर्जा स्त्रोत विकसित किये जायें। मैं चाहता हूँ कि कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि इस प्रकार हो कि इनका वर्तमान मूल्य दो गुना हो जावे। निश्चित रूप से इनकी खपत घटेगी। डीजल पेट्रोल का आयात कम से कम करके बिजली की खपत बढ़ाई जाये। परमाणु उर्जा को और महंगा रखकर सौर उर्जा या अन्य प्राकृतिक उर्जा का प्रोत्साहित किया जावे।

मैं जानता हूँ कि अनेक विद्वानों को ये सुझाव ना पसंद होंगे क्योंकि उन्ह तो डीजल पेट्रोल की अप्रत्यक्ष वकालत करनी है जो अन्ततः संदेह पैदा करती है कि खाड़ी देशों से इतना प्रेम क्यों? मेरा पुनः निवेदन है कि हम उर्जा नीति पर समग्रता से चिन्तन करें एक पक्षीय नहीं अन्यथा आपकी विद्वता संदेहास्पद भी हो सकती है।

9 श्री बजरंग बजाज– 7/1 मालवीय नगर जयपुर

विचार– आखिर हम मानव चाहते क्या है? सर्वनाश या सर्वहित। दो तीन वर्ष से ज्ञान तत्व जबसे श्री ध्रुवसत्य जी अग्रवाल जयपुर ने शुरू करवायी तब से नियमित पाठय पुस्तक की तरह आधोपान्त पढता हूँ। बहुत प्रभावित हूँ । आपके ज्ञान व विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणो से कई बार लिखने की सोच कर भी समयाभाव से अंजाम नही दे पाया।

ज्ञान तत्व 225 अंक 15–30 जून 2011 पृष्ठ –27 पर कार्यालयीन प्रश्नो के उत्तर मे उठाए बिन्दु अणु शक्ति संबंधित जर्मनी के अनुकरण का प्रश्न ही नही उठता। यह तो मात्र लेखक द्वारा अपनी बात का बल देने को प्रयुक्त शिक्षा सा लगना है। भारत तो सदा से ही प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण विकास का ही पक्षधर रहा है। क्या हम अपने आप पर स्वयं अनुशासन लगा थोडा सा भी अंकुश लगाने को तैयार नही? विकाश जैसा हो रहा है उनसे पर्यावरण हानि का लखा जोखा करेंगे तो पाएगें कि समस्त विकास के बावजूद अत्यावश्यक शुद्ध हवा पानी ही दुर्लभ हो गये है। कीटनाशक व रसायनो से व मिलावटो से मुक्त भोजन सामग्री भी दुर्लभ होती जा रही है। गरीब सीधा सरल व्यक्ति क्या करे? कहा से लाए शुद्व हवा शुद्ध पानी व शुद्ध भोजन के लिये धन?
अस्तित्व को ध्यान मे रखे बिना हो रहा विकास सर्वहिताय हो ही नही सकता । ऐसे विकास के कदमो पर रोक लगनी ही चाहिये। अणु शक्ति का विकल्प निश्चय ही पर्यावरणीय हितैषो यथा सूर्य वायु आधारित शक्ति ही प्रोत्साहित होनी चाहिये। तथा शक्ति पर भी स्वअनुशासित हो विचार करना होगा।
अधिकांश विषयों पर आपके अकाटय तर्को से मै बहुत ही लाभान्वित हो रहा हूँ। आपके प्रति बहुत बहुत मान सम्मान सहित

उत्तर–मैं अभी दिल्ली गया था। लौटते समय यमुना की गंदगी देखकर बहुत दुख हुआ। शहर की गंदगी तो यमुना में आ ही रही थी किन्तु औद्योगिक कारखानों का जहरीला पानी भी यमुना में ही आ रहा था। क्या हम ऐसे विकास पर संयम नहीं रख सकते? मैं बजाज जी से सहमत हूँ।

मेरा तो मत है कि इन सब समस्याओं के समाधान के पहले चरण के रूप में कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्य वृद्धि कर दी जावे। परमाणु उर्जा संबंधी आपने चर्चा की है। मैं परमाणु उर्जा के गुण दोषों का ज्यादा जानकार नहीं। मोटे–तौर पर मैं समझता हूँ कि डीजल पेट्रोल परमाणु उर्जा की अपेक्षा अधिक घातक है और प्राकृतिक उर्जा परमाणु उर्जा की अपेक्षा ज्यादा अच्छी है।जब पेशवर लोग परमाणु उर्जा का एकपक्षीय विरोध करते है तब मै उनका उत्तर देता हूँ अन्यथा मै स्वयं भी सौर उर्जा पवन उर्जा गोबर गैस का ही पक्षधर हूँ। मै तो यहॉ तक चाहता हूँ कि सौर उर्जा की जगह मानवीय उर्जा को ज्यादा महत्व प्राप्त होना चाहिये।

10 श्री चन्द्रमौलेश्वर जी

विचार

इस अंक मै आचार्य पंकज जी और आप के हिन्दू विषय पर प्रश्न उत्तर पढने का अवसर मिला। हिन्दू की आप लोंगों की व्याख्या से कुछ भिन्न कहना चाहूँगा । जापान मे रह रहे व्यक्ति को जापानी, चीन मे रहनेवाले को चीनी..... कहते हैं। इसी प्रकार हिन्दुस्तान मे रहने वालें को हिन्दू

कहतें हैं। इतिहास मे झांकने पर पता चलता है कि यह नाम हिन्दु भी आक्रांताओं का दिया नाम है जो यहॉ पर रहने वालो के लिये उन्होने दिया था। हमारे विदेशी और देशी राजनेताओ की बांटों और राज करों की नीति ने हमारे देश की पहचान ही मिटा दी है। अब हम यहॉ देश के नागरिको को भी कुछ इस प्रकार बांट रहे है कि यहॉ के रहने वाले खुद अपनी पहचान, अपनी मातृभूमि से लगाव आदि को ही मिटा दिया है। क्या यह पश्न निरर्थक है कि – हिन्दू कौन है?

हमारे संविधान ने भी इस मामले मे हमारे नागरिको को गुमराह किया है। ईडिया दैट इज भारत मे तो हिन्दूस्तान कहीं नही है । इस पर गंभीरता से विचार होना चाहिये कि हिन्दू का अर्थ हिन्दुस्तान मे रहने वाला हर नागरिक है, ठीक उसी तरह जैसे पाकिस्तान का हर नागरिक पाकिस्तानो है भले हो वह सुन्नी हो शिया हो या उहमदिया या और कोइ अन्य मजहब का मानने वाला!

उत्तर– आपके कथनानुसार जापान का रहने वाला जापानी और पाकिस्तान का पाकिस्तानी कहा जाता है तो हिन्दुस्तान का रहनेवाला हिन्दू कहा जाय तो आपत्ति क्यो? मेरा विचार है कि हिन्दुस्तान के निवासी यदि हिन्दू न कहे जाकर हिन्दुस्तानी कहे जावे तो क्या उचित नही होगा? आपकी परिभाषा मान ली जावे कि भारत का रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू है चाहे वह किसी भी धर्म का क्यो न हो तब भारत से बाहर रह रहे हिन्दू तो हिन्दू नही कहें जा सकेंगे । सुझाव के पूर्व इन प्रश्नो के उत्तर खोजने आवश्यक है।

हिन्द् शब्द को धर्म के साथ जोडा जावे या राष्ट्र के साथ या दोनो के साथ यह प्रयत्न महत्वपूर्ण नही । धर्म और राष्ट्र को एक समझना हमारो संस्कृति कभी नही रही। यह तो मूलतः इस्लामिक संस्कृति रही हैं । हमे ऐसे प्रयत्नो से बचना चाहिये।

25/10 तक संशोधित है

कार्यक्रम	दिनांक	समय	दिन	कार्यक्रमस्थल	पता	संयोजक	आयोजक	फोन
	8/11	7 बजे शाम	मंगलवार	नोएडा	अग्रसेन भवन	श्री धनश्याम जी 09810512491	श्रीसुरेश जी	09910078250
	9/11	11 बजे प्रातः	बुधवार	बी/198लोहिया नगर	गाजियाबाद	श्री अजय भाई 09891813517	श्री अजय भाई	09891813517
	10/11	11 बजे प्रातः	गुरूवार	मोहम्मदपुर दौराला	मेरठ	ओमपाल जी 09411826498	हरविन्दर सिंह	09917635763
	10/11	7बजे श्शाम	गुरूवार	किरण उत्सव मंडप नजीबाबाद रोड विजनौर	विजनौर	डा0 प्रकाश 09837033451	डा0 प्रकाश	09837033451
	11/11	10:30 प्रातः	श्शुक्रवार	पुरैनी	विजनौर	श्री धर्मवोर शास्त्री 09760755401	श्री धर्मीवर शास्त्री	09760755401
	11/11	3 बजे शाम	श्शुक्रवार	एन आई आई टी कालेज	बुन्दकी रोड नजीबाबाद	डा0 प्रकाश 09837033451	डा0 प्रकाश	09837033451
	12/11	11 बजे प्रातः	शनिवार	एस एम ज एन कालेज	हरिद्वार	श्री विजय शंकर शुक्ल 09412004952	डा0ए के गिल्डयार	
प्रेस कान्फेन्स	12/11	7 बजे शाम	शनिवार	सच्चा इंशानियत स्थल, कृष्णापुरी ,	मुजफरनगर	श्री होती लाल शर्मा 09219185842	श्री होती लाल शर्मा	0921918584 2
	13/11	11 बजे प्रातः	रविवार	रायपुर विकाश खंड सभागार	देहरादून	विजय शंकर शुक्ल 08057909512	श्री सुरत सिंह नेगी विजुनेगी	
	14/11	10 बजे प्रातः	सोमवार	अंबोली गाव	सहारनपुर	श्री रतीरामजी 09758900775		09759025707
	14/11	5 बजे शाम	सोमवार	माता बालासुन्दरी मंदिर के पास धर्मशाला मे शहॉजहॉपुर	अंबाला	श्रीअर्पित अनाम 09416461830	श्री रविन्द्र मोहन	09416007533
	15/11	11 बजे सुबह	मंगलवार	गवर्नमेन्ट सिनियर सेकेन्ड्री स्कूल बालूगंज शिमला–5	शिमला	श्री बलवंत यादव 09996940525	राजेन्द्र सिंह	
	16/11	10 बजे प्रातः	वुधवार	अग्रसेन भवन शेरपुर	संगरूर पंजाब	श्रो संजय भाई 09463218251	श्री राकेश जी गर्ग	
	16/11	4 बजे साम	वुधवार	हनुमान वाटिका न्यू बस स्टेड	कैथल	श्री इशम सिंह जी 09416111590	श्री इशम सिंह जी	09416111590
	17/11		गुरूवार			रणवीर शर्मा		
	18/11	11 बजे प्रातः	श्शुक्रवार	मेवाड युनिवरसिटी	चित्तौड गढ	श्री अशोक गडिया जी		

				परिसर गंगरार				
	18/11	श्शाम	श्शुकवार		भिलवाडा	श्री अशोक गडिया जी	हरिशगुरू नानी	09672086000
	19/11		श्शनिवार		राजसंमंद	श्री हीरालाल श्रीमाली 09414928380		
	20/11		रविवार					
	21/11	11 प्रातः	सोमवार	राजस्थान चेंबर भवन नियर न्यू गेट एम आईरोड	जयपुर	श्री धुव सत्य अग्रवाल 09314506482		01412520140
	22/11	स्पेयर	मंगलवार					
	23/11	10 बजे प्रातः	वुधवार	शाहपुर फागौता	गाजियाबाद	छबील सिह सिसोदिया 09760459770	छबील सिह सिसोदिया	09760459770
	23/11	2 बजे शाम	वुधवार	बनबोई	बुलंदशहर	श्रीनरेन्द्र सिंह 09012432074		
	24/11	10 बजे प्रातः	गुरूवार	ग्रामोदय वि0 धनारी गुन्नौर	बदायु	श्री रिषीपाल सिंह 09761458520	श्री बहादुर सिंहयादव	
	24/11	श्शाम	गुरूवार	रोटरी भवन चोपला रोड	बरेंली	राजनारायण 08307757404	राजनारायण	08307757404
	25/11	10 बजे प्रातः	श्शुकवार		बरेली	राजनारायण 09359496789	राजनारायण	09359496789
	25/11	श्शाम 3 बजे	श्शुकवार		सहावर काशीरामनगर	डा0 इश्लाम अहमद फारूकी		09749672547
	26/11	12 बजे दोपहर	श्शनिवार	रामतलाईमंदिर जहानाबाद	फतेहपुर	श्री बंशलाल सचान 9452780453	श्री गाग्पी प्रसाद मिश्र	8948702328
	27/11	11 सुबह	रविवार		बाराबंकी	श्री ओमप्रकाश जी 9838093579	श्री संतराम जी	9422196853
	27/11	7 बजे शाम	रविवार	अरविन्द पुंस्तकालय	फैजाबाद रूदौली	श्री कैलाश नारायण तिवारी	श्रासत्यदेवगुप्त	9305611303
	28/11		सोमवार		गोण्डा	श्री चित्रागद महंत	श्री चित्रागद महंत	9454283012
	29/11	सुबह	मंगलवार		गोरखपुर	श्रीओमकार तिवारी		9455828843
	29/11	शाम	मंगलवार	ग्राम सभा सचिवाल बोदरवार	कप्तानग्रज कुशीनगर	श्री उमाशंकर यादव	9451473510	
	2/12		श्शुकवार		डालटनगंज	श्री नवल बाबू		9431138375
	3/12		श्शनिवार		बोकारो	श्रीकृष्णलाल रूगटा		9431123154
	3/12		श्शनिवार		धनबाद	श्री जय किशन		326230747
	4/12		रविवार	गांधीनगर स्कूल	खगडिया	श्री टीपी जालान		9386473923
	5/12		सोमवार		राजगीर नालंदा	डा0 देवनन्दन चौधरी,		0943090723 1
	6/12		मंगलवार	जैन कालेज कुवर सिह वि0 वि0	आरा	आचार्य धर्मेन्द 09304074716		
	7/12	सुबह 10बजे	बुधवार		भोरे गोपालगंज	जगत नारायण 09931477881	महेश भाई	09507087289
	7/12	शाम	बुधवार	एस एस वी एन कालेज	गोरखपुर रोड	देवरिया	चंद्रिका चौरसिया	09415277834, 09415828259
	8/12	सुबह	गुरूवार		विलथरा रोड बलिया	चंद्र प्रकाश राय		
	8/12	शाम	गुरूवार		डी सी एस के पी जी कालेज	मउ	उमापति पांडे	9452206742
	9/12	सुबह	श्शुकवार	ए के कम्युटर सेटर आमघाट	गाजिपुर	श्री रामचंद्रदुवे	श्री रामचंद्रदुवे	09838933180
	9/12	शाम	श्शुकवार		वाराणसी	अशोक त्रिपाठी		09889136977
	10/12	सुबह	श्शनिवार		चोपन	देवेन्द्र शास्त्री	देवेन्द्र शास्त्री	
	11/12	सुबह	रविवार		ओबरा	नरेन्द्र नीरव		9415391239
	13/12	सुबह	मंगलवार		रायपुर	अजीम भाई		
	13/12	श्शाम	मंगलवार		रायपुर	श्री वर्मा जी		
	14/12	सुबह	बुधवार		भानुप्रतापपुर	वैधराज आहुजा		09179509805
	14/12	श्शाम	बुधवार		भानुप्रतापपुर	वैधराज आहुजा		
	15/12	श्शाम	गुरूवार		दुर्ग	डा0 कोठारी, राकेश शुक्ला		
	16/12	सुवह	श्शुकवार		गोन्दिया	मधुसुदन जी		
	16/12	श्शाम	श्शुकवार		वर्धा	सदा विजय आय		
	17/12	श्शाम	श्शनिवार		भोपाल	अशोक राजवैध		08989273092
	18/12	सुबह	रविवार		उज्जैन	प्रदीप जैन		09425945934

	19/12	सुबह	सोमवार		इंदौर	जसवंत राय जी		
	19/12	श्शाम	सोमवार		इंदौर	राजेन्द्र तिवारी भारतीय		
	20/12	सुबह	मंगलवार		सागर	डा0 प्रभु		
	20/12	श्शाम	मंगलवार		छत्तरपुर	जे0 पी0 गुप्ता		9993270703
	21/12	सुबह	बुधवार		रीवा	दुर्गेश जी		9907153554
	21/12	श्शाम	बुधवार		मनगवां	राम निवास गुप्ता जी		7660281367
	22/12	श्शुबर	गुरूवार		सीधी	श्री श्रुतिवंतु दुवे जी		
	22/12	श्शाम	गुरूवार		बुढार	श्री रोहणी प्रसाद गर्ग		09407326610
	23/12	सुबह	श्शुकवार		अनुपपुर	मुन्नी बाई		
	23/12	श्शाम	श्शुकवार		अनुपपुर	सीताराम श्शर्मा		
	24/12	सुबह	श्शनिवार		जशपुर	श्री कृपाशंकर सिंह		
	24/12	श्शाम	श्शनिवार		सीतापुर	खुशीरामजी		
	25/12	सुबह			रामानुजगंज			